# PHILOSOPHY

## Hons., Paper-I (Part I)

## Purusa and Prakriti (Samkhya)

## सांख्य का पुरुष एवं प्रकृति

Dr. S.K. Singh
Mob.-9431449951

पुरुष-प्रकृति संबंध :-

→ सांख्य दर्शन में प्रकृति और पुरुष दोनों कारणरहित, अविनाशी एवं स्वतंत्र हैं। दोनों के संयोग से ही सृष्टि का विकास होता है।

→ प्रकृति और पुरुष के संयोग के दो प्रयोजन हैं -

(i) प्रकृति को अपने अस्तित्व के लिये दृष्टा एवं भोक्ता की अपेक्षा रहती है। परिणामस्वरूप प्रकृति पुरुष के दर्शनार्थ, समस्त विषयों एवं भोग्य पदार्थों के निर्माण के लिये उससे संयुक्त होती है।

(ii) दूसरी ओर पुरुष तीन प्रकार के दुःखों (आधिदैविक, आधिभौतिक एवं आध्यात्मिक दुःख) से मुक्त होकर कैवल्य चाहता है। कैवल्य की प्राप्ति के लिये यह आवश्यक है कि पुरुष स्वयं को प्रकृति के तीन गुणों से सर्वथा भिन्न समझे। इसके लिये महत् (बुद्धि) आदि व्यक्त पदार्थों का आविर्भाव होना आवश्यक है।

→ जिस प्रकार एक अन्धा और लंगड़ा यद्यपि अलग-अलग वन को पार करने में असमर्थ होते हैं, फिर भी एक-दूसरे के सहायता से पास्पर मिल कर वन को पार कर जाते हैं, उसी प्रकार अचेतन प्रकृति एवं निष्क्रिय पुरुष भी एक-दूसरे की सहायता से सृष्टि के निर्माण में समर्थ हो जाते हैं।

Scanned with CamScanner

# प्रकृति और पुरुष में अन्तर

| प्रकृति | पुरुष |
|---|---|
| → प्रकृति जड़ है। | → पुरुष चेतन है। |
| → प्रकृति विषय (object) है, जिसका भोग होता है। | → पुरुष विषयी (Subject) है, जो भोक्ता के रूप में होता है। |
| → प्रकृति त्रिगुणात्मक (Consist of three Gunas) है। | → पुरुष त्रिगुणातीत है। |
| → प्रकृति एक है। | → पुरुष अनेक है। |
| → प्रकृति परिणामी नित्य है। | → पुरुष कूटस्थ नित्य है। |
| → प्रकृति सक्रिय है, इसमें परिवर्तन होते रहते हैं - सरूप परिवर्तन अथवा विरूप परिवर्तन | → पुरुष कूटस्थ नित्य होने से इसमें कोई परिवर्तन नहीं होता, यह निष्क्रिय है। |
| → प्रकृति बन्धन का कारण है। प्रकृति ही बँधती और मुक्त होती है। | → पुरुष नित्य मुक्त है। अविद्या-वश अपने को प्रकृति एवं उसके विकारों से तादात्म्य होकर बंधनग्रस्त समझती है। |
| → प्रकृति परिवर्तनशील है। | → पुरुष अपरिवर्तनशील है। |
| → प्रकृति जगत का आदि कारण है। पुरुष के सान्निध्य से जगत के रूप में (सूक्ष्म पदार्थ से स्थूल पदार्थ तक) अपने को विकसित करता है। | → पुरुष कारण-कार्य से परे है। |

Scanned with CamScanner